

MBh. 1, 8341 (u. ऋणिन्). Auch vier und fünf Verpflichtungen werden erwähnt: ऋणैश्चतुर्भिः संयुक्ता ज्ञायते मानवा भुवि। पितृदेवर्षिमनुजैर्देव्ये तेभ्यश्च धर्मतः ॥ — ॥ यज्ञैस्तु देवान्प्रीणाति स्वाध्यायतपसा मुनीन्। पुत्रैः श्रद्धैः पितृंश्चापि श्रान्शंस्येन मानवान् ॥ MBh. 1, 4656. 4658 (vgl. R. 2, 4, 13). ऋणमुन्मुच्य देवानामृषीणां च तथैव च। पितृणामथ विप्राणामतिथीनां च पञ्चमम् ॥ पर्यायेण विभुद्धेन सुविनीतेन कर्मणा। 13, 2200. पित्र्यादृणादनिर्मुक्तः 1, 4655. 4660. ऋणाभिधानात्स्वयमेव केवलं तदा पितृणां मुमुचे स बन्धनात् Ragh. 3, 20. न चोपलेभे पूर्वेषामृणानिर्मेतसाधनम्। सुताभिधानं स ज्योतिः सद्यः शोक्तमोऽपहम् ॥ 10, 2. अत्यमृणम् die letzte (nach der Reihenfolge in TS.) Schuld, die Schuld gegen die Manen, die Erzeugung eines Sohnes 1, 71. एवं ज्ञाता द्वपवतो मरुसन्नाशि रायुषः। भवत्यमृणस्य (gegen die Manen) मोक्षारः सत्पुत्राः पुत्रिणे क्तिताः ॥ Suçr. 1, 317, 17. ऋणान्मुक्ताः R. 4, 44, 7. ऋणा Schuld im Gegens. zu धन und ऋक्थ Vermögen: ऋणे धने च सर्वस्मिन्प्रविभक्ते यथाविधि M. 9, 218. Jāñ. 2, 117. आपत्सु मित्रं ज्ञानीयाद्युद्धे प्रूरम्णे प्रुचिम् Hir. I, 66. ऋणं कर्तुं eine Schuld machen Jāñ. 2, 45. ऋणकर्तार MBh. 13, 1592. Kāñ. 43. ऋणं धारयति er hat eine Schuld P. 8, 2, 60, Sch. ऋणं दा, प्रयम् und संनी eine Schuld abtragen: पादिकं च शतं वृद्धा ददास्यृणमनुग्रहम् MBh. 2, 212. P. 4, 3, 47. M. 8, 154. Jāñ. 2, 45. ऋणे देये प्रतिज्ञाते M. 8, 139. ऋणं दाप्यः 108. ऋणादात् Hir. I, 100. ऋणादान das Nichtabtragen (ऋण + अदान) oder Eintreiben (ऋण + आदान) einer Schuld M. 8, 4. प्रयच्छेत्स्वधनादृणम् 158. यस्मिन्पूषं सैनयति 9, 107. mit प्राप् eine Schuld auf sich laden 8, 107. mit परिप्स् (आप् im desid. mit परि) eine Schuld einfordern 161. ऋणमोचन das Abtragen einer Schuld Mir. 268, 9. = ऋणमुक्ति Trik. 2, 9, 2. = ऋणमोक्ष Hār. 157. = ऋणापनयन und ऋणापनोदन ÇKDr. und Wils. = ऋणशोधन Wils. (vgl. ऋणं विशोध्यम् Vop. 26, 10). ऋणोद्धरण (ÇKDr. °प्राकर्ण) das Eintreiben einer Schuld Wils. ऋणग्रह्ण das Borgen, der Borger; ऋणग्रहिन् Borger Wils. Vgl. अधमर्णा, उत्तमर्णा, अनृणा. — b) Feste (डुर्गा) H. an. 2, 134. — c) Wasser (vgl. ऋत) ebend. — d) negative quantity, minus Wils. — 3) m. N. pr. eines Vjāsa VP. 273. — Vielleicht in etym. Zusammenh. mit lat. reus.

ऋणैकाति (ऋ° + का°) adj. schuldeinfordernd, rächend: Indra RV. 8, 30, 12.

ऋणचैत् (ऋ° + चित् von चि) adj. schuldadbrechnend, bestrafend: स ऋणचिदृणाय ब्रह्मणस्त्यतिः RV. 2, 23, 17. — Vgl. ऋणचय.

ऋणच्युत् (ऋ° + च्युत्) adj. schuldtilgend: इयमददाद्भ्रमर्मण्युत् दिवो दासं वध्यश्चायं द्राघ्यै RV. 6, 61, 1.

ऋणचयं (ऋणम्, acc. von ऋण, + चय) m. N. pr. eines Fürsten der Rucama RV. 5, 30, 12. 11. des Verfassers von RV. 9, 108. — Vgl. ऋणचित्.

ऋणादास (ऋ° + दा°) m. ein Slave in Folge einer Schuld; Einer der seine Freiheit hingegeben hat, um eine Schuld zu tilgen, Mir. 268, 9.

ऋणामत्कुणा (ऋ° + म°) m. Bürge für eine Schuld, der wie eine Wanze (मत्कुणा) den Schuldner verfolgt, ÇABDAR. im ÇKDr.

ऋणमार्गणा (ऋ° + मा°) m. dass. Hār. 137.

ऋणाय (ऋण + या) adj. schuldverfolgend, — rächend: अस्ति सत्यं ऋणाय ब्रह्मणस्पतं उग्रस्य चिदमिता वीरुर्कृषिणाः RV. 2, 23, 11. 17. ऋणा चित्रं ऋणाय न उग्रो हरे श्रुता उग्रसो ववाधे 4, 23, 7. त्वं कृ त्पदं ऋणाय इन्द्र धीरो ऽसिर्न पर्व वज्रिना प्रणासि 10, 89, 8. द्विपस्तरुध्या ऋणाय न ई-

यसे 9, 110, 1. — Sij. erklärt das Wort durch ऋणानो यावयिता Schuldabwehrer, indem er ya auf yu, yaavayati zurückführt; uns scheint die Ableitung von या (der Schuld nachgehend) grammatisch leichter und zugleich dem Sinn entsprechend zu sein.

ऋणायवन् (ऋ° + या°) adj. dass. von den Marut: अस्ति सत्यं ऋणायवनेयः RV. 1, 87, 4.

ऋणवन् (von ऋण) und mit Dehnung ऋणवन् adj. schuldbeladen, verschuldet: ये मर्त्यं पतन्नायत्तमैर्ऋणावान् न पतयेत्त सर्गैः RV. 1, 169, 7. ऋणावा विभ्यद्धनमिच्छमानः 10, 34, 10. in Verbindlichkeit, Verpflichtung stehend: ज्ञायमानो वै ब्राह्मणास्त्रिभिर्ऋणावा ज्ञायते ब्रह्मचर्येण ऋषिभ्यो यज्ञेन देवभ्यः प्रजया पितृभ्यः TS. 6, 3, 10, 5.

ऋणवत् (wie eben) adj. eine Verpflichtung gegen Jmd (gen.) habend, verschuldet VISHNUDHARMOTTARA (s. u. ऋण 2, a). पिता च ऋणवान् शत्रुः Hir. Pa. 20, v. 1.

ऋणात्क (ऋण + अत्क) m. der Planet Mars ÇABDAR. im ÇKDr.

ऋणार्ण n. angebl. ऋण + ऋण P. 6, 1, 89, Vārtt. 7. Vop. 2, 9.

ऋणावन् s. ऋणवन्.

ऋणिक (von ऋण) m. Schuldner Jāñ. 2, 56, 93.

ऋणिन् (wie eben) adj. eine Verpflichtung habend, verschuldet: ऋणिनो मानवा ब्रह्मन् ज्ञायते येन तच्छृणु। क्रियाभिर्ब्रह्मचर्येण प्रजया च न संशयः ॥ तदपक्रियते सर्वं यज्ञेन तपसा सुतेः। MBu. 1, 8341. 2, 2330. m. Schuldner Jāñ. 2, 86. — Vgl. अनृणिन्.

ऋतं (von einer Wurzel अर in derselben Richtung der Bedeutung wie अरम् lat. ratus. 1) adj. mit einem instr. compon. सुखेन ऋतः = सुखर्त (sic) P. 6, 1, 89, Vārtt. 5. Vop. 2, 8 (mit अर्त verwechselt). a) gehörig, ordentlich, recht: सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्ऋताय पीतये RV. 1, 137, 2. 9, 17, 8. राय ऋताय सुक्ता गोभिः व्याम सधमार्दः 5, 20, 4. — b) rechtschaffen, wacker, tüchtig: इम ऋतस्य वावृधुर्देणे RV. 7, 60, 5. पीपाय धेनुरर्दितर्ऋताय जनीय कृत्रिर्दे 1, 153, 3. मित्रेव ऋता 10, 106, 5. त्वमित्सप्रयो अस्यग्ने त्रातर्ऋतस्काविः 8, 49, 5. पर्वमान ऋतः काविः सोमः पवित्रमार्सदत् 9, 62, 30. ऋतश्च सत्यश्च VS. 17, 82. — c) wahr AK. 1, 1, 3, 22. Trik. 3, 3, 132. H. 204. an. 2, 159. Med. t. 5. सती वाचन्ता कर्तुमर्हसि त्वम् MBu. 14, 1980. तामतां कुरु — पुरोक्ता भारतीम् N. 12, 14. सर्वमेतदतं नन्ये यन्मो वदसि Bhag. 10, 14. तस्मात्साहयं वेददत्तम् M. 8, 82, 87. — d) geehrt (पूजित). — e) glänzend (दीप्त) H. an. Med. t. 6. — Davon 2) ऋतम् adv. gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. recht, richtig; gehörig, nachdrücklich: ऋतमर्पयति सिन्धवः सत्यं तातान् सूर्यः RV. 1, 103, 12. ऋतं मासाह् मर्हि चित्पृतन्यतः 8, 73, 5. ऋतं संपतो अमृतमेवैः 1, 68, 4 (2). ऋतं शंसत ऋतु दीध्यानाः 10, 67, 2. ऋतं दिवे तदवाचं पृथिव्या अग्निश्चाचार्य 1, 183, 10. 3, 36, 2. ऋतमृताय पवते सुमेधाः 9, 97, 23. Besonders mit इ richtig d. h. den richtigen Weg gehen: ऋतं यती सरमा गा अचिन्दत् 5, 43, 7. richtig, rechtschaffen wandeln: सुगः पन्थो अनृन्त आर्दितयास ऋतं पते 1, 41, 4. 188, 2. 8, 27, 20. 9, 69, 3. 74, 3. 10, 78, 2. — ऋतमानोतमातिध्यम् auf die richtige, gehörige Weise Buṅg. P. 9, 3, 19. — 3) m. als Personification Naig. 3, 4. Nir. 10, 40. N. pr. eines Rudra MBu. 13, 7090. eines Fürsten VP. 390. — 4) n. a) feste Ordnung, Bestimmung, Entscheidung: ऋतं सिन्धवो वरुणस्य यति RV. 2, 28, 4. पुर्वोर्ऋतं रौदसी सत्यमस्तु 3, 54, 3. ऋतमृतेन सर्वतिपिरे दत्तमाशते 5, 68, 4. आर्दितयासस्तस्मान्ना यूयमृतस्य ऋतेन मुञ्जत in Form